इकाई 4 प्रवासन और विकास

संरचना **मंदिरा दत्ता**

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 प्रवासन, विकास और जेंडर : संपर्क की कड़ियां

4.4 प्रवासन की लागत और उससे वसूलियां

4.5 कौशलयुक्त प्रवासी

4.6 अंतर्राष्ट्रीय श्रम प्रवासन के निहितार्थ

4.7 सारांश

4.8 इकाई के अंत में कुछ प्रश्न

4.9 संदर्भ

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

विकास का संप्रत्यय (concept of development) केवल तभी प्रयोग किया जा सकता है जब इसके प्रति समग्रतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाया जाए। वे प्रवासी जो अपना मूलस्थान छोड़कर चले जाते हैं उन्हें भी विकास में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए। प्रवासी व्यक्ति को एक ओर कार्यबल के लिए अतिरिक्त मानव शक्ति और दूसरी ओर समुदाय के लिए अतिरिक्त भार भी समझा जाना चाहिए। यदि कोई समुदाय प्रवासन द्वारा लाए गए परिवर्तनों के साथ रह सकता है तो प्रवासन समुदाय के विकास को उन्नत बनाने में सहायता कर सकता है। हाल के कुछ वर्षों से प्रवासन और विकास के बीच संबंध को लेकर विमर्श बढ़ता जा रहा है जो मूलतः शरणार्थियों और विकास सहायता के बीच संबंधों की चर्चा से उभरा था।

यह विमर्श मोटे तौर पर 'उत्तरी' (यूरोपीय, उत्तरी अमेरिकी) दृष्टिकोण को लेकर विकसित हुआ है जो ऐसे मूल प्रत्ययों से निकला है जो मोटे तौर पर यूरोप और उत्तरी अमेरिका में साझे तौर पर स्वीकृत विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, यह एक सामान्य धारणा है कि यदि एक बार मूल देश विकास के उच्चतर स्तरों पर पहुंच जाएं तो प्रवासन को उल्लेखनीय तौर पर कम किया जा सकता है। हालाँकि, अनुभवजन्य साक्ष्य यह संकेत करते हैं कि प्रवासन और विकास के बीच संबंध अत्यधिक जटिल हैं और यह भी कि विकास स्वयं कम की बजाय अधिक प्रवासन की ओर ले जाता है।

विकास के व्यापक प्रत्यय को अंगीकृत करना अधिक महत्वपूर्ण है। विकास को अधिकांशतया आर्थिक वृद्धि के साथ सहयोजित कर दिया जाता है जो प्रवास करने की कमतर आवश्यकता की ओर ले जाता है। हालाँकि लोगों को इस संकुचित दृष्टिकोण से आगे जाना चाहिए और लोगों की दोनों के प्रति समझ पर विचार करना चाहिए। इनमें तुलना प्रवासन और विकास के विमर्श हेतु अन्तर्दृष्टि पैदा करता है, जिसमें प्रवासियों की अपेक्षित भूमिका और उनके संघों तथा सरकार द्वारा मूल देश और गंतव्य देश में निर्धारित किए गए कदम भी शामिल होते हैं। प्रवासियों के वास्तविक सुख और अपने जीवन को नेतृत्व देने की उनकी क्षमताओं पर भी चर्चा की जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, उपभोक्ता

वस्तुओं और भवनों के निर्माण पर प्रवासियों द्वारा किए गए खर्च को अधिकांशतया 'गैर-उत्पादक' माना जाता है परन्तु जब तक वे लोगों और समुदायों के सुख में योगदान करते रहें उन्हें 'विकास' के तौर पर देखा जा सकता है।

प्रवासन और विकास के बीच संबंधों, मूल देशों में विकास पर प्रवासियों के पहलों और उनसे होने वाली वसूलियों के व्यापक मूल्यांकन को गंभीर अनुभवजन्य आंकड़ों के साथ विमर्श में विभिन्न स्थितियों को मजबूती प्रदान करने की आवश्यकता है। इन मूल्यांकनों को विकास के तमाम सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक आयामों तथा यह लोगों की आजीविकाओं को किस तरह से प्रभावित करता है, इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

प्रवासी संघों हेतु पहलकदमी के लिए सरकार के समर्थन को सुसंगत विकास रणनीति में प्रवासियों की सहभागिता को प्रोत्साहित करने की बजाय प्रवासियों के माध्यम से विकास को प्रोत्साहित करने की तरह देखा जा सकता है।

अब हम इस इकाई के उद्देश्यों पर एक नज़र डालते हैं।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ चुकने के बाद, आप सक्षम होंगे कि :

- जेंडर, प्रवासन और विकास के बीच संपर्क की कड़ियों को समझ सकें;
- जेंडर के परिप्रेक्ष्य से विदेश से आने वाले धन का विश्लेषण कर सकें; और
- कुशल मजदूरों की तरह महिलाओं की संकल्पना को आलोचनात्मक ढंग से समझ सकें।

4.3 प्रवासन, विकास और जेंडर : संपर्क की कड़ियां

प्रवासन और विकास के बीच संपर्कों को अक्सर विकासात्मक गतिविधियों में प्रवासियों की सहभागिता के द्वारा सुझाया जाता है। यह सहभागिता हमेशा समस्या-मुक्त नहीं रहती; राष्ट्रीय विकास के लिए स्थितियों को निर्मित करने के लिए जिम्मेदारियों को सरकारों से स्थानांतरित कर व्यक्तिगत प्रवासी और प्रवासी संघों की ओर कर देने का खतरा रहता है। सभी प्रवासी उद्यमी या 'विकास मजदूर' बनने के इच्छुक नहीं होते। नीति निर्माताओं के बीच यह अपेक्षा और ऐसे ही अन्य स्थायी विचार मूल देशों में प्रवासियों को विकास में सहभागी बनना उनके लिए प्रोत्साहक नहीं होता। ऐसी आशान्वित नीतियों और अपेक्षाओं को व्यक्तिगत प्रवासियों पर प्रक्षेपित करना लगता है नीति विफलता का स्थाई नुस्खा बन गया है। यद्यपि कई प्रवासन और विकास गतिविधियां ग्रामीण क्षेत्रों और खेतिहर गतिविधियों पर केन्द्रित होती हैं, प्रवासियों की गतिविधियां और निवेश उत्तरोत्तर शहरी क्षेत्रों में संकेन्द्रित होता है। शहरीकरण की इस सामान्य प्रवृत्ति का प्रतिरोध करना बहुत सतही जान पड़ता है। प्रवासियों का जीवन दो या अधिक भिन्न भिन्न 'संसारों' में रहता है और वे दोनों में ही गहराई से डूबे होते हैं। यह स्थिति विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने के लिए उन्हें इज़ाजत देती है, जिसे हमेशा पहचान नहीं मिल पाता। प्रवासी लोग विकास में न केवल 'विकास एजेण्ट' की तरह संवर्द्धित मूल्य जोड़ते हैं बल्कि विमर्श में नया दृष्टिकोण लाकर भी ऐसा करते हैं। प्रवासी जनसमूह सार्वजनिक विमर्श में सुधार लाने और सरकारी सुधारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्यों के साथ एक दबाव समूह की तरह काम कर सकता है। उदाहरण के लिए, गरीब देशों के पास पर्याप्त संसाधन नहीं होते कि वह शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का व्यापक प्रसार कर सके जो शिक्षा, जेंडर और स्वास्थ्य के लक्ष्यों को प्राप्त

करने के लिए आवश्यक हैं। बच्चों को अपने गांव से बाहर यात्रा करनी पड़ती है वह भी हर बात के लिए नहीं बल्कि सबसे मौलिक शिक्षा पाने के लिए। गुणवत्ता की बात ही जाने दीजिए अभिभावकों के लिए गुणवत्ता से अधिक स्थानीय उपलब्धता अधिक महत्वपूर्ण बात है। यही हालत स्वास्थ्य सुविधाओं के वितरण में भी है कि लोगों को यहां तक कि मूलभूत चिकित्सा के लिए सुदूर यात्रा करनी पड़ती है। स्थानीय जनसंख्या के स्थानांतरण की व्याख्या में सेवाओं के वितरण में असमानता प्रायः उतनी ही महत्वपूर्ण हो उठती है जितनी कि रोजगार अवसरों का असंतुलित वितरण।

अब तक हमारा विश्लेषण लम्बे समय तक स्थिर रूप से चलने वाली स्थितियों तक केन्द्रित था। छोटी अवधियों के लिए अप्रत्याशित प्रवासन के साथ, शिक्षित मजदूरों का विदेशगमन गृहराष्ट्र के लिए शुद्ध हानि की तरह होता है। जैसे-जैसे समय बीतता है हालाँकि, बाद में आने वाली पीढ़ी उनके शिक्षा निर्णयों को अंगीकृत कर लेता है और धीरे-धीरे शिक्षा का औसत स्तर आंशिक तौर पर या पूर्ण रूप से सुधरने लगता है, जो लंबी अवधि में संभावित ''शुद्ध लाभ'' की तरह होता है। इस संक्रमण की अवस्था में कुछ अतिरिक्त कोशिशें अवश्य प्रचालित होती रहती हैं। विशेष रूप से एक वृहद आर्थिक और सामाजिक साहित्य है जो इस बात पर जोर देता है कि प्रवासियों के संजालों की निर्मिति प्रवासियों के गृह राष्ट्र और मेजबान राष्ट्र के बीच वस्तुओं, कारकों और विचारों के आदान प्रदान को सुविधाजनक बनाता है।

लगभग सभी प्रकार के गैर-मजबूरी वाला प्रवासन मांग से प्रचालित (demand driven) होता है। जब लोग कहीं और अवसरों के बारे में सुनते हैं, जो वास्तव में उनकी शिक्षा का ही असर होता है, वे उस ओर जाने के लिए उत्सुक या प्रवृत्त होते हैं। इसलिए, जैसे-जैसे राष्ट्रों का विकास होता है, प्रवासन में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। लम्बी अवधि के दौरान, जैसे-जैसे समाज और अर्थव्यवस्थाएं उच्चतर से निम्नतर जन्मदर और मृत्युदर जैसी जनांकिकीय संक्रमण की ओर बढ़ती हैं, वैसे-वैसे उनकी प्रवासन का संक्रमण भी निवल उत्प्रवासन से निवल आप्रवास की ओर हो सकता है। हालाँकि यह विकासक्रम यह सूचित नहीं करता कि विदेशाभिगमन या उत्प्रवासन कम होता है, साधारण तौर पर होता यह है कि निवल प्रवाह विपरीत हो जाता है। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र और दिल्ली जैसे विकसित राज्य आप्रवासन वाले प्रमुख राज्यों में से हैं। महाराष्ट्र राज्य में आने वाले प्रवासियों के प्रकारों में बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे अल्प-विकसित राज्यों और अन्य बीमारु राज्यों से आने वाले प्रवासी हैं। गरीबी अलग-थलग पड़े हुए हिस्से और क्षेत्रों में प्रायः प्रवासन का दर निम्न होता है जबकि वैश्विक प्रणाली में सक्रिय तौर पर सहभागिता करने वाले क्षेत्र उच्च स्तर के प्रवासन और गतिशीलता की प्रकृति से जाने जाते हैं।

प्रवासन, वैश्वीकरण के और अधिक स्पष्ट अभिव्यक्तियों में से एक है। प्रवासन, वैश्वीकरण और विकास के प्रसंग में महिलाएं वैश्विक कामगारों की तरह उभरी हैं। अब हम वैश्वीकरण के उत्पाद के तौर पर 'वैश्विक स्त्री' की स्थिति का अवलोकन करेंगे। बारबरा इरेनरीख और अर्ली रसेल हॉक्शिल्ड को उद्धृत करते हुए कहा जा सकता है, ''धन्यवाद करो उस प्रक्रिया को जिसे हम हल्के फुल्के ढंग से 'वैश्वीकरण' कहते हैं, महिलाएं इस तरह से गतिशील हैं जैसी इतिहास में कभी नहीं रहीं'' (पृष्ठ 238)। बढ़ती हुई वैश्विक असमानता के कारण, महिला श्रम गरीब देशों से अमीर देशों की ओर आया, नौकरानी और यौन कर्मियों की तरह कार्य करने के लिए प्रवास कर रही हैं। महिलाओं का जेंडरीकृत विशिष्ट कार्य वैश्विक दक्षिण से वैश्विक उत्तर की ओर स्थानांतरित हो गया है जिसमें प्रवासी महिलाएं अपने परिवारों को भयानक गरीबी से निकालने और उनकी सहायता करने में सक्षम हो रही हैं। इरनेरीख और हॉक्शिल्ड के अनुसार स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले सौदेबाजी के इस स्वरूप

को 'विश्वव्यापी जेंडर क्रांति (Worldwide gender revolution)' की तरह संदर्भित किया जा सकता है। जेंडर क्रांति के कारण तीसरी दुनिया से आने वाली महिला प्रवासी कामगार न केवल अपने परिवारों की भौतिक स्थितियों को सुधार रही हैं बल्कि साथ ही आजाद होने की स्थितियां भी प्राप्त कर रही हैं। प्रवासी महिला कामगारों को उनके परिवारों के लिए स्वतंत्र आय अर्जक की तरह भी देखा जा रहा है। वैश्विक असमानता ने सवेतन काम करने के लिए महिलाओं को उनके घरों से धकेल दिया और ठीक उसी समय उन्हें कामगारों के रूप में असंख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ा। महिला प्रवासी कामगारों के लिए प्रवासन के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों निहितार्थ हैं। इनमें से कुछ नकारात्मक निहितार्थ हैं:

- महिला प्रवासी कामगार अधिकतर गहरी रंग वाली महिलाएँ हैं इसलिए वे नृजातीय भेदभाव की शिकार हैं। इतना ही नहीं, आया, नौकरानियों और यौन कर्मियों की तरह उनके कार्य भी उन्हें सार्वजनिक नज़रों से दूर रखते हैं।

- महिला प्रवासी कामगार अपने घर लौटने पर प्रायः रुढ़िवादिता का सामना करती हैं। उन्हें पीड़िताओं, अनैतिक, पराए, समाज के लिए निकासी तथा वस्तुओं के प्रतिनिधि की तरह पेश किया जाता है। (पाइल, 2011, पृष्ठ 253)।

- महिला कामगार अपने मेजबान देशों में मजदूरी, कार्यस्थलों पर उत्पीड़न और नकारात्मक प्रतिनिधित्व के संदर्भ में प्रायः भेदभाव का अनुभव करती हैं। लेकिन महिला प्रवासी कामगारों के लिए समस्याएं तीव्रतर होती जाती हैं। पर्रिनास ने पाया है कि लॉस एंजिलिस और रोम में फिलीपींस की घरेलू कामगारों को अपने परिवारों से पीड़ाजनक अलगाव, निम्नतर पेशेवर पद, उनकी मेजबान देशों से सामाजिक बहिष्कार और अर्द्ध नागरिकता या छद्म नागरिकता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा (पाइल, 2011, पृष्ठ 254)।

- महिला कामगार जिन्होंने देखभाल जैसी सेवाओं के लिए पारदेशीय प्रवासन किया था उन्हें अपनी तस्करीकृत कामगार की स्थितियों के चलते जेंडर, नृवंश और जाति आधारित भेदभाव के बहुल स्वरूप का सामना करना पड़ा। उदाहरण के लिए, बॉल ने सउदी अरब में फिलीपींस की नर्सों के अनुभवों के बारे में लिखा है जिसमें इस बात का खुलासा किया है कि अपने पेशों में नर्सों को महिला के रूप में भेदभाव का सामना करना पड़ता है जो विपरीत लिंगों के अविवाहित सदस्यों को आपस में छूने जैसे वर्जित काम को करने के कारण होता है (पाइल, 2011)।

- महिला पारदेशीय कामगारों को उनकी राष्ट्रीयता और नृजातीय पहचान के आधार पर पेशेवर बंदी का सामना भी करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, ताइवान में इंडोनिशियाई नर्सों को फिलीपींस की नर्सों की अपेक्षा सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण काम करने पड़ते हैं। सिंगापुर में, फिलीपींस से आई नर्सों को महीने में एक या दो दिन की छुट्टी मिलती है जबकि इण्डोनेशियाई और श्रीलंकाई नर्सें की पात्रता ऐसी सुविधाओं के लिए नहीं भी हो सकती है। इसी प्रकार नृजातीय अल्पसंख्यक वर्ग से आने वाली नर्सों को प्रशिक्षण और प्रोन्नति के लिए कमतर रूप से प्रोत्साहित किया जाता है (पाइल, 2011)।

- जो महिलाएँ आवासीय घरेलू कामगारों के रूप में काम करने के लिए प्रवासन करती हैं उन्हें सामाजिक अलगाव की समस्या का सामना करना पड़ता है। पाइल (2011) के अनुसार, परिवार के अंदर उनकी पहचानों को एक सामाजिक हस्ती की बजाय सिर्फ वस्तु तक सीमित कर दिया गया है।

- प्रवासी महिलाओं की कार्यदशाएं सचमुच चिंता का विषय हैं। उदाहरण के लिए घरेलू नौकरानियों को खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं दिया जाता, सोने के लिए अपर्याप्त समय छोड़ा जाता है और अपनी निजता बनाए रखने के लिए भी कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी जाती। इन मुद्दों से इतर उन्हें शारीरिक और यौन उत्पीड़नों का शिकार भी होना पड़ता है। वाल्डमैन ने अपनी रिपोर्ट में खुलासा किया है कि प्रतिवर्ष लगभग सौ श्रीलंकाई महिलाओं का शरीर उनके गृहदेश वापस भेजा जाता है। इसी तरह सिंगापुर में लगभग 100 नौकरानियां ऊँची बिल्डिंगों से गिरकर मर जाती हैं। इसका कारण सिर्फ आत्महत्या या सफाई या कपड़े पसारने के दौरान फिसलकर गिरना हो सकता था (पाइल, 2011)।

- प्रवासी महिलाओं का परिवार देखभाल की कमी का सामना करते हैं क्योंकि उनके घरों में मां या महिला सदस्य नहीं होती।

ऊपर उल्लिखित ये कुछ चुनौतियां हैं जिनका सामना पारदेशीय महिला प्रवासी कामगारों द्वारा किया जाता है। उन महिला कामगारों पर नज़र डालना भी आवश्यक है जिनके पास कठिन परिस्थितियों का प्रतिरोध करने के लिए अपनी एजेन्सी जैसी कोई संस्था है। इसलिए, कुछ पारदेशीय महिला प्रवासी कामगारों की कहानियों को पढ़ना महत्वपूर्ण है जिन्होंने अपने काम के संबंध में अपनी पहचानों को साबित करने के लिए संघर्ष किया। चेंग (2004) के अनुसार, फिलीपींस की और ताइवान की महिला नियोजकों ने देखभाल काम के संबंध में अपनी सकारात्मक पहचानों की पुनर्निर्मिति के लिए संघर्ष किया। इसके अलावा, महिला प्रवासी कामगार अपने परिवारों की भौतिक स्थितियों में सुधार को देखकर भी अपने को सशक्त महसूस करती हैं। प्रवासन, महिलाओं को उनके परिवारों के लिए उन्नत और बेहतर घरेलू स्थितियां प्रदान करना, छोटे व्यवसायों का वित्तीयन करना, पारिवारिक कर्ज को पाटना और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करना सम्भव बनाता है (बारबर 2000; गैमबर्ड 2000; फ्रैंक 2001, पाइल, 2011 में उद्धृत)।

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

4.4 प्रवासन की लागत और उससे वसूलियां

प्रवासन ढांचे पर निर्मित प्रवासियों के नेटवर्कों के परिणामों का विश्लेषण करने के लिए हाल में एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक शास्त्र उभरा है। यह प्रवासन के संचयी सिद्धांत का खाका खींचता है, यह उल्लिखित करते हुए कि पहले प्रवासी साधारणतया मध्यवर्गीय सामाजिक-आर्थिक पदानुक्रम से आते हैं और ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनके पास इतने पर्याप्त संसाधन हों जिससे वे यात्रा के खतरों और लागत को वहन कर सकें लेकिन इतने समर्थ भी न हों कि बाहर जाकर काम करना अनाकर्षक हो। फिर इन प्रवासियों से उनके परिवार वाले और मित्र बन्धु रोजगार पाने और प्रवासन में सहायता के लिए संबंध बनाते हैं, जिससे कि उनके लिए बाहर जाने की जोखिम और लागत काफी हद तक कम हो सके। यह अतिरिक्त सदस्यों के लिए प्रवासन की सम्भाव्यता और आकर्षण को बढ़ाता है, उन्हें प्रवास के लिए और आगे अन्य समूह के लोगों से संजाल संपर्कों के साथ जुड़ने के लिए अनुमति देता है। प्रवासन की लागत और उससे वसूलियों पर चर्चा में जेंडर के आयाम को समझना महत्वपूर्ण है। जीन एल. पाइल (2011) के अनुसार महिलाओं को मूल्यवान 'श्रम निर्यात' की तरह देखा जाता है क्योंकि पूर्व में हुए शोध अध्ययनों ने दिखलाया था कि पुरुष प्रवासियों की अपेक्षा महिलाएँ घर पर पैसा भेजने के मामले में अधिक विश्वसनीय हैं। मेरिएम एस. लो (2008) समालोचनात्मक ढंग से वसूलियों के जेंडरीकृत और सामाजिक प्रभावों का अवलोकन करती हैं। वह तर्क देती हैं कि महिलाओं के लिए वसूली का सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव हो सकता है क्योंकि वसूलियां परिवारों की शक्ति संरचना को आर-पार काटती

हैं जो महिलाओं के लिए आर्थिक निर्भरता और सुभेद्यताओं को पुनर्जन्म देती हैं। यदि लो को उद्धृत करें तो, ''वसूलियां, महिलाओं के अतिरिक्त, जेंडर क्रमों और पदानुक्रमों को स्थायित्व प्रदान करती प्रतीत होती हैं, जो अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के लिए वसूलियों का रणनीतिक रूप से पुनर्निवेश कर सकती हैं, जेंडर पदानुक्रम की सौदेबाजी के लिए वसूलियों को एक अवसर की तरह इस्तेमाल कर सकती हैं और अंततः पारिवारिक प्रबंधन में अधिक निर्णय निर्माण शक्ति लगा सकती हैं'' (2008, पृष्ठ 426)।

प्रवासन, विकास और वसूलियों पर चर्चा में वसूलियों के सामाजिक और मानवीय लागत पर चर्चा करना आवश्यक है क्योंकि महिलाओं के सवाल सामाजिक संरचना में जमे हुए हैं। वसूलियों के जेंडरीकृत आयामों का आंकलन प्राथमिक तौर पर मात्रात्मक पैटर्न में करना कठिन है। जैसा बाख (2011) ने कहा है, वसूलियां केवल पैसे के स्थानांतरण की भौतिक क्रियाओं से परे भी बहुत कुछ है क्योंकि यह गरीबी कम करने और वैश्विक बाजार में श्रम के जेंडर विभाजन के विवाद से बहुत पेंचीदा तरीके से जुड़ा हुआ है। वांग (2006) के अनुसार वसूलियां स्वयं को समझने और संबद्धता के भूगोल का सुराग लेती है और फिर उसमें विस्थापन को उभारती हैं क्योंकि समय और स्थान के महान विस्तार में हाशिए पर रहने वाले समुदाय अनवरत रूप से वैश्विक शहरी केन्द्रों से अन्तर्गुम्फित होते रहते हैं। इस प्रक्रिया में भेजने वाले और पाने वाले के बीच संबंध, स्थापित जेंडर भूमिकाओं की सौदेबाजी, पुनरुत्पत्ति और रूपांतरण का एक स्थान बन जाता है (वांग 2006, उद्धृत बाख 2011 पृष्ठ 139)।

फिलीपींस के खेतिहर गांवों में अपने अध्ययन में दीर्द्रे मैकके (2005) ने पाया कि महिला उत्प्रवासन के कारण उन गांवों में सांस्कृतिक मानदण्ड, पारिस्थितिकीय गतिशीलता और आजीविका पैटर्न में आधारभूत तब्दीली आई। नकदी फसल उत्पादन ने गुजारे लायक खेती की संस्कृति को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया। अध्ययन ने दर्शाया कि कुछ महिला प्रवासियों ने वसूली के पैसे का उपयोग अपने नाम से संपत्तियां अर्जित करने में और अपने लिए एक नई आर्थिक पहचान बनाने के लिए की। यह नई पहचान घर पर छूट गए पुरुषों की पहचान पर आधारित थी। लेखिका ने निम्नलिखित उदाहरण दियाः नार्दो (पति) ने ग्लोरिया (पत्नी) द्वारा भेजे गए पैसे का उपयोग अपने को एक व्यावसायिक फसल के उत्पादक के रूप में स्व-नियोजित बनने के लिए किया, फिर भी उसका वर्गीय रूपांतरण विदेश में ग्लोरिया के नेटवर्क और उसके परिवार की सहायता पर निर्भर करता है'' (उद्धृत बाख 2011, पृष्ठ 140)। घर वापस पैसा भेजने की प्रवृत्ति उसकी साहसी, योग्य और आधुनिक के रूप में नई पहचान का हिस्सा है और दूसरी प्रवासी महिलाओं से भी जुड़ाव हुआ जो स्वयं महिला आत्म-सिद्धि की नई पहचान को ग्रहण कर रही थी।

जैसा पहले बताया गया था, प्रवासियों के संजालों की भूमिका काम की उपलब्धता के बारे में सूचना प्रसारित करने और काम खोजने में सत्कार प्रदान करना और सहायता प्रदान करना होता है। इसलिए, पूर्व में हुए प्रवासन ने प्रगतिशील रूप से शिक्षा में अपेक्षित प्रतिफल को बढ़ाया (प्रवासन लागत का निवल) और, परिणामस्वरूप शिक्षा में घरेलू नामांकन को भी। शिक्षा में लगे हुए व्यक्तियों की इष्टतम संख्या में वृद्धि ने देश में शिक्षित कामगारों में उनके हिस्से को भी बढ़ाया। इस अर्थ में प्रवासियों के नेटवर्क का मानव पूँजी निर्माण में और प्रतिभा पलायन के अल्पावधिक हानिकारक प्रभावों को कम करने में सकारात्मक प्रभाव है।

विशेष तौर पर निम्न-कुशल प्रवासियों के पास दो मूलतः अस्पष्ट पहचान हो सकते हैं। एक तरफ तो गंतव्य देशों में वे प्रायः सामाजिक-आर्थिक पदानुक्रम में सबसे निचले पायदान पर रहते हैं जो उन्हें सुभेद्य और उत्पीड़क स्थितियों में छोड़ देता है। वहीं दूसरी ओर वे अपने मूल देश में स्थानीय कुलीन वर्ग के भाग हो सकते हैं, जो उन्हें एक विशेषाधिकार वाली स्थिति में रखता है।

प्रवासी संघों के 'सामूहिक' वसूलियों, प्रवासियों या 'गृह नगर' संघों के माध्यम से विकास पहलों पर अवलोकन, प्रायः स्थानीय समुदायों में छोटे स्तर की अवसंरचना परियोजनाओं का समर्थन करते हैं जिससे सामान्य सुख की स्थिति सुधरे। इन पहलकदमियों का स्थानीय आर्थिक वृद्धि पर बहुत सीमित प्रभाव होता है। सामूहिक वसूली परियोजनाओं के मूल्यांकन की तात्कालिक आवश्यकता है क्योंकि ऐसी परियोजनाओं की सफलता और इसके सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों को प्रभावित करने वाले कारकों के स्वतंत्र मूल्यांकन बहुत थोड़े से हैं।

प्रवासन से जुड़े हुए बहुतेरी लागतें हैं, प्रवासन प्रक्रिया के दौरान छोड़ी गई आय और प्रत्यक्ष खर्चे तथा मनोवैज्ञानिक लागत भी हैं। कई पश्चिमी देशों के संकुचित दृष्टिकोण के रू-ब-रू आप्रवासन भी परिणाम में उच्चतर प्रवासन लागत के रूप सामने आता है। प्रवासन और विकास के किसी और पहलू की बजाय सम्भवतः वसूलियों के बारे में ही अधिक लिखा जा चुका है। थोड़ी कम प्रशंसनीय तथ्य यह है कि वसूलियां स्वयं प्रवासियों के मूल देश को प्रतिबिंबित करती हैं और यह उच्च रूप में संकेन्द्रित होती हैं जो वापस अपने मूल देश के बहुत थोड़े से कस्बों और गांवों में पहुंचती हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या प्रवासियों की परियोजनाएं ऐसी पहलकदमियों का समर्थन करती हैं जो समुदायों द्वारा पहचानी गईं सर्वाधिक अविलंब आवश्यकताओं को लक्षित करती हैं। बहुत उच्च राजनीतिक संदर्भ में, परियोजनाएं हो सकता है प्रवासी कुलीनों की आवश्यकताओं को पूरा करें, जो आगे चलकर स्थानीय विकास में योगदान की बजाय वृहत्तर असमानता को बढ़ाती है। प्रवासन के मूल देशों की सरकारें प्रवासन के प्रति मुक्त व्यापार या अबाधता का दृष्टिकोण अपनाने की ओर प्रवृत्त होती हैं और कुछ मामलों में प्रवासन का योगदान आर्थिक निर्भरता की ओर भी हो सकता है।

स्थानीय परियोजनाओं के लिए प्रवासियों की सहायता और उनकी वसूलियों पर भरोसा किसी वृहत्तर राष्ट्रीय विकास रणनीतियों के निरूपण हेतु हतोत्साहित करने वाला हो सकता है। इसी प्रकार से पाकिस्तान से युनाइटेड किंगडम जाने वाले अधिकांश प्रवासी मुख्यतः पाकिस्तान के उत्तर में स्थित ग्रामीण जिले मीरपुर से आते हैं। भारत से मध्यपूर्व की ओर जाने वाले प्रवासियों में से अधिकांश भारत के दक्षिणी राज्य केरल से आते हैं (जकारिया, मैथ्यू और राजन 2003) और चीन से प्रवासन तीन दक्षिण तटीय राज्यों गुआंगदांग, फूजिअन और झेजिआंग से और इन प्रांतों के भी बहुत ही विशिष्ट छोटे हिस्सों से होता है। पेरू में, वास्तव में 82 प्रतिशत परिवार जो बाहर से आने वाला पैसा प्राप्त करते हैं, वे अधिकतर अधिक गरीब सिएरा की बजाय अधिक विकसित तटीय प्रांतों से होते हैं वह भी राजधानी, मेट्रापालिटन शहर लीमा में 57 प्रतिशत के साथ (आईओएम, 2008)। पेरू में बाहर से पैसा पाने वाले परिवारों में सिर्फ 5 प्रतिशत से कुछ ही ज्यादा लोग ग्रामीण क्षेत्रों से थे। इसका तात्कालिक प्रभाव यह होता है कि इससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों तथा स्वयं ग्रामीण क्षेत्रों के बीच में असमानता बढ़ती है और प्रबलित होती है। इस तरह से सहायता या आधिकारिक विकास सहायता, जो कुछ विशिष्ट समूहों और विशेषतः गरीबी के उन्मूलन की ओर लक्षित हो सकती थी, के विपरीत बाहर से आने वाले पैसे की प्रकृति बिल्कुल अलग होती है। वह प्रवासन के जड़ों के विशिष्ट क्षेत्रों पर केन्द्रित होते हैं जिसमें न तो सबसे गरीब क्षेत्र शामिल होते हैं और न उन क्षेत्रों के सबसे गरीब लोग ही।

आगे पढ़ने से पहले आप निम्न अभ्यास को कीजिए।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) महिला कामगारों के लिए प्रवासन के नकारात्मक परिणामों की सूची बनाइए।

2) बाहर से आने वाला पैसा किस प्रकार से प्रवासन की लागत में सहायता करता है?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

आने वाले अनुभाग में आप कुशल श्रमिकों के प्रवासन के बारे में पढ़ेंगे।

4.5 कौशलयुक्त प्रवासी

व्यवसाय एवं व्यापार नेटवर्क की निर्मिति में एक दूसरे प्रकार का नेटवर्क प्रभाव शामिल होता है; इसी प्रकार के 'प्रवासी फैलाव की बाह्यता' (diaspora externality) को समाजशास्त्रीय साहित्य में बहुत समय से और अभी बिल्कुल हाल में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में अर्थशास्त्रियों द्वारा पहचान मिली है। वास्तव में बहुत सारे दृष्टांतों में, और मानव व्यापार सैद्धांतिक ढांचे में जो कोई भी आशा करेगा उसके विपरीत, व्यापार और प्रवासन एक दूसरे के स्थानापन्न की बजाय एक दूसरे के पूरक प्रतीत होते हैं। मजे की बात यह है कि इस तरह की सम्पूरकता विषमांग वस्तुओं में व्यापार के लिए अधिकांशतया प्रचलित होना दिखता है, जहां नृजातीय संजाल (ethnic networks) विनिमय किए गए वस्तुओं की प्रकृति से जुड़े सूचना समस्याओं को वशीभूत करने में सहायता करता है। हालाँकि, व्यापार और प्रवासन के बीच सम्पूरकता या स्थानापन्नता के संबंध ने किस तरह प्रवासन के कौशल संयोजन (skill composition of migration) को प्रभावित किया यह अभी भी अस्पष्ट है।

उच्च कौशल युक्त व्यक्तियों का उत्प्रवासन, मूल देशों के लिए नकारात्मक रूप में देखा जाता था और व्यापक पैमाने पर अब भी देखा जाता है क्योंकि वे ऐसे लोगों को खो देते

हैं जो विकास करने में सर्वाधिक उपयुक्त रूप से योग्य हो सकते थे। उपलब्ध आंकड़े सुझाते हैं कि निरपेक्ष संख्याओं के संदर्भ में, कौशलयुक्त प्रवासियों के स्रोत प्राथमिक तौर पर विकसित दुनिया में पड़ते हैं और अपेक्षाकृत कम संख्या में पूर्व और दक्षिण एशिया के मध्यम आय वाले विकासशील देशों में। हालाँकि किसी भी देश के कौशलयुक्त कार्यबल के अनुपात के रूप में कौशलों की हानि का आंकलन यह दिखलाता है कि छोटे द्वीपीय देश और उप सहारा के कई देश उच्च रूप से प्रभावित हैं, और यही वे देश हैं जिनमें प्रतिभा पलायन की परिघटना पाई जा सकती है।

प्रतिभा पलायन की चर्चाओं में प्रवासियों के मूल का विशिष्ट स्थान व्यापक तौर पर अस्पष्ट होता है। यदि कौशलयुक्त लोग सबसे बड़े शहरी क्षेत्रों में संकेन्द्रित हों तो उनका उत्प्रवासन गरीब ग्रामीण क्षेत्रों को बहुत गहरे तक प्रभावित करने नहीं जा रहा है जहां जरूरत हो सकता है सबसे अधिक हो। हैती में कुल डॉक्टरों के लगभग 90 प्रतिशत कदाचित पोर्ट–ओ–प्रिंस में संकेन्द्रित हैं। प्रतिभा पलायन विमर्श के प्रायः उपेक्षित कई परिप्रेक्ष्य अभी भी लंबित हैं। पहला, क्या उच्च रूप से कौशलयुक्त पेशेवर उन स्थितियों के लिए सबसे उपयुक्त कर्मचारी हैं जहां विकास की सबसे अधिक आवश्यकता है? उदाहरण के लिए, आधारभूत कौशलों से युक्त स्वास्थ्य कर्मियों की आवश्यकता उन पेशेवर डॉक्टरों से अधिक हो सकती है जो आधुनिक अस्पतालों के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानकों में प्रशिक्षित हों। दूसरा, विकासशील देशों में वेतन और कार्य की दशाएं उस क्षेत्र से प्रवासन को बढ़ावा दे सकती हैं परन्तु देश से प्रवासन को नहीं। यद्यपि, इक्कसवीं सदी के आरम्भ के समय दक्षिण अफ्रीका में 32,000 नर्सों के खाली पद थे और कुछ 35,000 पंजीकृत नर्सें देश में निष्क्रिय या बेरोजगारी पाईं गई थीं (ओईसीडी, 2004)।

प्रवासन और कौशलयुक्त श्रमिकों पर चर्चा में श्रम के स्त्रीकरण और वैश्विक देखभाल श्रृंखला की परिघटना के बारे में पढ़ना महत्व की बात है। आप लोग श्रम के स्त्रीकरण की परिघटना के बारे में अपने पहले के पाठ्यक्रमों एमजीडब्ल्यू-002 और एमजीडब्ल्यू-004 में पढ़ चुके होंगे। अब हम लोग श्रम के स्त्रीकरण पर कौशलयुक्त श्रम और अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन के संबंध में नज़र डालेंगे। जब पश्चिमी देशों ने सही प्रकार के लोगों को आकर्षित करने के लिए अपनी उत्प्रवासन नीतियों को लागू किया तो कौशलयुक्त श्रमिकों के लिए प्रतियोगिता बहुत तेज हो गई। यह देखा गया कि देखभाल के कामों के क्षेत्र में अधिक महिलाओं को धकेल दिया गया। यही वैश्विक देखभाल श्रृंखला है जो मजदूरी के बदले घर पर या संस्थाओं में लोगों की देखभाल को शामिल करता है। नारीवादी विद्वानों ने देखभाल अर्थव्यवस्था के संप्रत्यय को लेकर बहुत आलोचनात्मक चर्चाएं की हैं और महिलाओं के निकाय और देखभाल कार्यों के बीच विचारधारात्मक धारणाओं के रहस्यों को खोलने की कोशिश की है।

जेंडर, प्रवासन और राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर रचे गए शास्त्रों ने वैश्विक देखभाल श्रृंखला के संप्रत्यय का विश्लेषण किया है। **पॉलिन गार्डिनर बार्बर** (2011) के अनुसार वैश्विक देखभाल श्रृंखला के अन्तर्गत, जब महिलाओं के काम सामाजिक रूप से स्वीकृत प्रजनन के क्षेत्र से निकलकर बाजार की ओर स्थानांतरित हुए, उन्हें देखभाल अर्थव्यवस्था में कौशलयुक्त श्रमिकों की तरह देखा गया। विकासशील देशों से विकसित देशों की ओर 'देखभाल के स्थानांतरण' की प्रवृत्ति है जिसका एक जोरदार पक्ष यह है कि प्रवासी महिलाओं के मूल देशों में वैश्विक देखभाल की कमी होती गई है। फिलीपींस वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए नर्सों का निर्यात करने वाला सबसे प्रमुख स्थल बन गया। फिलीपींस की 70 प्रतिशत से अधिक नर्सिंग स्नातक विदेशों में काम पाने में सफल रहीं। फिलीपींस से महिला उत्प्रवासन के प्रभाव के रूप में, लगभग 50 प्रतिशत लोग स्वास्थ्य देखभाल की सुविधाओं तक अपनी

पहुंच कायम नहीं कर पाए हैं (बार्बर, 2011)। कौशलयुक्त महिला श्रमिकों के प्रवासन ने दो स्तरों पर वैचारिक समझ को बढ़ावा दिया हैः 'देखभाल का स्थानांतरण (transfer of care)' और 'देखभाल की कमी (deficit of care)'।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों में फिलीपींस जैसे देशों के पास महिला कामगारों का सर्वाधिक प्रतिनिधित्व है। वर्ष 2003 में फिलीपींस से 73 प्रतिशत कार्य संविदाएं महिलाओं के नाम जारी किए गए (रामीरेज़ उद्धृत बाख 2011)। घरेलू देखभाल सहायिकाओं, घरेलू नौकरानियों और नर्सों के रूप में महिलाओं को उत्तरी देशों को स्थानांतरित किया गया। निश्चित रूप से वैश्विक उत्पादन में प्रजनक कार्यों के शामिल होने ने एक ऐसा बाजार निर्मित किया जिसमें मजदूरी के बदले महिलाओं के प्रजनक कार्यों को खरीदा जा सके। ठीक इसी समय इस बढ़ती राजनीतिक अर्थव्यवस्था ने वैश्विक श्रम बाजार में वर्ग, वंश और जेंडर विषमताओं को भी प्रबलित किया है (उद्धृत बाख़ 2011)।

जेंडर–विलगित व्यवसाय (Gender-segregated occupation) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय श्रम बाजार का ही अपना हिस्सा है जैसा कि आप अपने पाठ्यक्रम एमडब्ल्यूजी-004 में पढ़ चुके होंगे। इलेक्ट्रॉनिक और वस्त्र कारखानों में युवा महिलाओं को उनकी तेज नज़र, निपुणता और स्वीकृत विनयशीलता के चलते खपा दिया जाता है (संदर्भ बाख़, 2011)। विकासशील देशों से महिलाएं विकसित देशों में बहुत से कारणों से प्रवासित होती हैंः परिवार, घरेलू श्रम, यौन कर्म, मनोरंजन और सत्कार, पेशेवर कार्य, व्यापार और उद्यमशीलता तथा कारखाने में कार्य। विशिष्ट कार्यों में महिलाओं का सम्मिलन प्रवासियों के मेजबान देशों और उनके गंतव्य देशों के प्रवासन पर राष्ट्रीय नीतियों को आकार देता है। मैक्सिको और फिलीपींस जैसे कुछ देश महिला कामगारों को लक्षित करते हैं क्योंकि वे विदेशों से आने वाले पैसे के प्रवाह को निरंतर बनाए रखती हैं (फ़िट्ज़गेराल्ड 2009, बाख़ 2011 में)। यह संक्षिप्त चर्चा किसी देश में जेंडर, प्रवासन और विकास को अन्तर्सम्बंधित करने के महत्व को रेखांकित करती है।

अंतिम तौर पर, मुख्यतः उपलब्ध आंकड़ों की समस्याओं के कारण कौशलयुक्त श्रमिकों के प्रशिक्षण के स्थान को कभी कभार ही विचार में लाया जाता है। जबकि मध्यम-आय देशों जैसे भारत या फिलीपींस जो शिक्षा की लंबी परम्परा संजोए हुए हैं, से आने वाले अधिकांश कौशलयुक्त श्रमिक मुख्यतः अपने मूल देशों में ही प्रशिक्षित किए जाते हैं, लेकिन यही बात गरीब देशों के मामले में सही नहीं है जहां प्रशिक्षण के उन्नत संस्थानें ही उपलब्ध नहीं हैं। एक अनुमान लगाया गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले लैटिन अमेरिकी और कैरीबियन देशों से आए लोगों में से लगभग 55 प्रतिशत को अमेरिका में ही प्रशिक्षित किया गया है; यहां तक कि अमेरिका में चीन और भारत से आने वाले लोगों में 40 प्रतिशत लोग उस देश में प्रशिक्षित किए गए हैं। 1999 में संयुक्त राज्य अमेरिका में काम कर रहे विदेशी वैज्ञानिकों में से दो तिहाई से ज्यादा लोगों को अमेरिका में ही प्रशिक्षित किया गया है।

इस प्रकार बहुत सी प्रतिभाएं गंतव्य देशों में निखारी गईं हैं भले ही उन्हें वहां पैदा न किया गया हो। यह भी स्पष्ट है कि स्थानीय स्तर पर भी गरीब क्षेत्रों में गांवों के बच्चों को अपनी माध्यमिक स्तर और उससे ऊपर की शिक्षा के लिए वृहत्तर बस्तियों की ओर जाना पड़ता है। इस प्रकार सभी स्तरों पर प्रशिक्षण बस्तियों के पदानुक्रम के प्रगतिशील रूप से उच्चतर स्तरों पर घटित होता है, यह ऐसी प्रक्रिया है जिसे प्रवासन द्वारा सुविधा प्रदान की गई है।

यह देखते हुए कि किसी देश या किसी समुदाय के सबसे अच्छे और सबसे प्रतिभाशाली, साथ-साथ सबसे धनी सदस्य उनके जन्म क्षेत्रों से बाहर रहते हैं, और ये प्रवासी या वह समुदाय जो बाहर रहता है, एक ऐसे संसाधन की तरह देखा जाता है जिसे गृह या जन्म

क्षेत्रों के विकास के लिए निचोड़ा या ''उनका फायदा उठाया'' जा सकता है। बिना किसी शंका के, प्रवासी समूह जैसे कि समुद्रपारीय चीनी या विएत कियू ने क्रमशः चीन और विएतनाम के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और लगातार निभा रहे हैं। हालाँकि इन दोनों ही मामलों में हम लोग मजबूत ''विकासवादी'' राज्यों से निबट रहे हैं। वर्तमान तीव्र आर्थिक विकास में भागीदारी करने के लिए समुद्रपारीय प्रवासी या तो अपने देश में निवेश करें, या विदेशी मुद्रा भेजें जैसा भी वे चुनते हैं। यह बहुत ही अविवेकपूर्ण होगा कि समुद्रपारीय प्रवासियों से उनके मूल देशों के असफल राज्यों और अर्थव्यवस्थाओं में अपने आप से भागीदारी करने के लिए अपेक्षा करना अविवेकपूर्ण होगा और अपने गृह क्षेत्रों में विकास को प्रोत्साहित करने के योग्य होने में भी। उन्हें किसी प्रभाव संरचना के अन्तर्गत काम करना होगा यदि उन्हें अपने मूल देशों पर अपना प्रभाव रखना है तो। यह हमेशा याद रखा जाना चाहिए कि प्रवासी लोगों में से सभी को अपने गृह क्षेत्रों में सरकारों के सर्वाधिक हित में काम करने की आवश्यकता नहीं है और गृह देश में राजनीतिक संरचनाओं को क्षीण करने के लिए सक्रिय रूप से तलाश कर सकते हैं। प्रवासी संसार बहुत ही विषमजातीय है। मूल देश के विकास के लिए काम करने के लिए इसे आवश्यक रूप से समांग संस्था के रूप में होना चाहिए।

अभी पढ़कर खत्म किए पिछले अनुभाग की समझ का आंकलन करने के लिए आप निम्न गतिविधियों को कीजिए।

गतिविधिः

अपने आस पड़ोस में यथार्थ जीवन में घटित किसी कौशल प्रवासन का लेखा-जोखा प्रस्तुत कीजिए, जिसे आपने स्वयं देखा हो या उस अनुभव का हिस्सा रहे हों।

आगे आने वाले अनुच्छेद में आप मूल देश और साथ-साथ गंतव्य देश पर अंतर्राष्ट्रीय श्रम प्रवासन के निहितार्थों के बारे में पढ़ेंगे।

4.6 अंतर्राष्ट्रीय श्रम प्रवासन के निहितार्थ

यह निश्चित नहीं है कि प्रवासी अपने गंतव्य देशों में रोजगार पा लेंगे या यही कि उनकी मानव पूँजी स्थानांतरणीय है। इस प्रकार, कम से कम प्रवेश के समय, आप्रवासी जन वहां के श्रम बाजार के अकुशल हिस्से तक सीमित रहने को प्रवृत्त रहते हैं। काम खोजने में अपेक्षित और वास्तविक परेशानियां संस्थानों, भाषाओं और मेजबान देश की आदतों की जानकारी के अभाव के परिणामस्वरूप होती हैं। लेकिन आंकलनों ने सुझाया है कि जब विकसित अर्थव्यवस्थाएं प्रवासीय श्रम में भाग लेते हैं तो दूसरे देश से आने वाला विदेशी धन मूल देश में गरीबी को कम करने में भूमिका निभाता है।

यह आंकलन किया जा चुका है कि दक्षिण भारत के केरल राज्य से खाड़ी देशों को होने वाला बड़े पैमान का श्रम प्रवासन उस राज्य में गरीबी को 12 प्रतिशत तक कम करने में योगदान कर चुका है (जकारिया, मैथ्यू और राजन, 2003)। गरीबी उन्मूलन पर विदेशों से आने वाले पैसों के प्रभाव का इसी तरह का विश्वसनीय साक्ष्य लैटिन अमेरिकी देशों से भी उपलब्ध है। फिर भी, केरल द्वारा प्राप्त विदेशी धन की विशाल मात्रा के बावजूद राज्य ने आर्थिक वृद्धि में उसी के समानांतर वृद्धि का अनुभव नहीं किया बल्कि वास्तव में 1980 और 1998 के बीच सकल राज्य घरेलू उत्पादन की सूची में और नीचे चला गया। विदेशों से आने वाला धन मानव पूँजी में सुधार कर सकता है परन्तु ऐसा करने में कुछ जनसंख्या को आगे प्रवासन हेतु निर्भर भी बना देता है।

खाड़ी देशों में और अधिकांश पूर्वी और दक्षिण पूर्वी एशिया में श्रम प्रवासन का ऐसा प्रतिमान है कि प्रवासियों को गंतव्य अर्थव्यवस्थाओं में स्थायी रूप से बसने की अनुमति नहीं दी जाती। इसका अर्थ होता है कि राज्य (राष्ट्र) ऐसी अस्थाई जनसंख्याओं की मेजबानी करते हैं जिन्हें नागरिकता की बात छोड़िए लम्बी अवधि के निवास का अधिकार भी नहीं होता। प्रवासियों के अधिकारों में, न केवल उचित मजदूरियों और कार्यदशाओं के लिए उनकी पात्रता और मूलभूत सेवाओं तक उनकी पहुंच की बात होती है बल्कि उनके परिवारों को साथ लाना या रखना भी प्रमुख मुद्दों की तरह उभरते हैं। उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया और यूरोप की विकसित अर्थव्यवस्थाओं में, उनके अधिक विकसित अधिकारों के कानूनों के साथ, अस्थाई कामगारों को स्वीकार करने का मुद्दा प्रत्याशित नागरिकों के विरोध में मूलभूत और संवेदनशील सवालों को उठाते हैं जिनका जवाब देना आसान नहीं होता। चूंकि ये अर्थव्यवस्थाएं अपनी खुली राजनीतिक प्रणालियों के साथ आवश्यक रूप से प्रजातंत्र हैं, विशिष्ट नागरिक हित समूहों की आवाजों को प्रायः आप्रवासियों के विरुद्ध उठाया गया, और इसीलिए आप्रवासन कुछ गंतव्य समाजों में एक प्रमुख राजनीतिक मुद्दा बन गया।

2006 से पहले, अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन के बहु-आयामी परिप्रेक्षयों को संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित तमाम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और शिखर सम्मेलनों के परिणाम प्रपत्रों में लक्षित किया गया था। 1974 के संयुक्त राष्ट्र विश्व जनसंख्या सम्मेलन में अंगीकृत किए गए विश्व जनसंख्या कार्य योजना और 1984 के जनसंख्या पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सहमत हुए कार्रवाई की सिफारिशों दोनों ने अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन के प्रासंगिक पहलुओं को लक्षित किया जिसमें विकास के साथ इसके संबंध, प्रवासी कामगारों का संरक्षण, अनियमित प्रवासन और जबर्दस्ती विस्थापन जैसे मुद्दे शामिल थे। 1994 में काइरो में जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा अंगीकृत कार्रवाई का कार्यक्रम आज तक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन पर स्वीकार किए गए सबसे व्यापक लेखों में से एक है। इसके बाद अधिकांश संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों और उनके परिणाम प्रपत्रों, जिसमें सामाजिक विकास हेतु विश्व शिखर सम्मेलन (कोपेनहेगन, 1995), महिलाओं पर चौथा विश्व सम्मेलन (बीजिंग, 1995), संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दि घोषणा (2000) और विश्व शिखर सम्मेलन परिणाम (2005) शामिल हैं, ने अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन के प्रासंगिक पहलुओं को लक्षित किया (आईओएम, 2008)।

काइरो सम्मेलन के बाद से अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन और विकास, महासभा की द्वितीय समिति की कार्ययोजना में द्विवार्षिक तौर पर आने वाले एक उप-विषय के रूप में शामिल हो गया है। कई वर्षों के लिए द्वितीय समिति ने अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन और विकास पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने की संभावनाओं पर विचार किया। इस वाद विवाद का परिणाम, दिसम्बर 2003 में, अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन और विकास पर बिना किसी बंधनकारी परिणाम के उच्च-स्तर के एक संवाद के आयोजन करने के निर्णय के रूप में सामने आया।

विश्व के कुल शरणार्थियों के 80 प्रतिशत से अधिक की मेजबानी विकासशील देशों द्वारा की जाती है और वे भी अपने जन्म वाले देश के अन्तर्गत ही रहते हैं। इनमें से, शरणार्थियों का बहुमत तथाकथित दीर्घ शरणार्थी स्थितियों (protracted refugee situations) में है, जो पांच वर्षों से अधिक अवधि से शिविरों, बस्तियों में बद्ध या शहरी क्षेत्रों में स्थित हैं और देश प्रत्यावर्तन, पुनर्वास या स्थानीय एकीकरण जैसे स्थायी समाधानों के अवसरों की अनुपस्थिति में अपने अधिकारों तक पहुंच में गम्भीर प्रतिबन्धों का सामना करते हैं।

लक्षित विकास सहायता (targeted development assistance टीडीए) की जरूरत वहां पड़ती है जहां दाता राज्य, प्रथम आश्रय वाले मेजबान देशों को संरक्षण और स्थायी समाधानों तक शरणार्थियों की पहुंच को बढ़ाने के लिए साधन के रूप में समुद्रपारीय विकास

सहायता प्रदान कर सकता है। इसकी केन्द्रीय प्रकृति एक एकीकृत विकास उपागम है जो शरणार्थियों और मेजबान समुदायों दोनों की आवश्यकताओं पर, उदाहरण के लिए आजीविका अवसरों को सुधारने, सेवा प्रावधानों या अवसंरचना के माध्यम से, केन्द्रित रहती हैं। इसका उद्देश्य होता है अधिकारों, स्व-सामर्थ्य और जहां सम्भव हो स्थानीय एकीकरण तक शरणार्थियों की पहुंच को बढ़ाना। कुछ निश्चित शर्तों के अन्तर्गत विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों को लक्षित विकास सहायता का शरणार्थियों की मेजबानी करने वाले क्षेत्रों में उपयोग उनके मूल क्षेत्रों में शरणार्थियों के संरक्षण और स्थायी समाधानों तक उनकी पहुँच को बढ़ा सकता है, जबकि साथ ही साथ विकसित और विकासशील दोनों देशों की चिंताओं को लक्षित करते हुए।

भूतकाल से हमारे पास कुछ सफल और कुछ असफल उदाहरणों की भरमार है, जो ऐसी स्थितियों के प्रति अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं जिकसे अन्तर्गत लक्षित विकास सहायता संरक्षण और दीर्घावधि के समाधानों तक पहुंच को बढ़ाती है और साथ ही दाता और मेजबान दोनों देशों की चिंताओं और हितों का ख्याल भी रखती है। 1980 के दशक के दौरान अफ्रीका में शरणार्थियों को सहायता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों (International Conferences on Assistance to Refugees in Africa - आईसीएआरए) और केन्द्रीय अमेरिका में शरणार्थियों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (International Confernce on Refugees in Central America - सीआईआरईएफसीए) दोनों में 'शरणार्थी सहायता और विकास (Refugee Aid and Development)' के मत का उपयोग किया गया। 2000 के दशक के शुरुआती दौर में इस प्रत्यय को पुनर्जीवित किया गया और जांबिया तथा यूगांडा की स्थितियों में उपयोग किया गया। साथ ही साथ महत्वपूर्ण मानव अधिकार निहितार्थों को समेटे हुए, दीर्घ शरणार्थी स्थितियों (पीआरएस) ने राज्यों के लिए कई तरह की समस्याओं को जन्म दिया। दक्षिणी मेजबान राष्ट्रों के लिए वे अल्प संसाधनों हेतु प्रतियोगिता के कारण स्थानीय समुदायों के साथ तनाव उत्पन्न कर सकते हैं और किसी अंतर्राष्ट्रीय भार वहन की अनुपस्थिति में इसे एक सुरक्षा खतरे की तरह माना जा सकता है।

1980 के दशक के आखिरी दौर और 1990 के आरम्भिक दौर में केन्द्रीय अमेरिका जैसी स्थितियों में स्व-सामर्थ्य और स्थानीय एकीकरण पर आधारित एकीकृत विकास सहायता उपागम दाताओं और मेजबान देशों के हितों की रक्षा करते हुए शरणार्थियों के अधिकारों में भी वृद्धि करने में सफल हुआ था। विकसित देशों के लिए लक्षित विकास सहायता के पास अनियमित द्वितीयक आवागमनों को कम करने, आतंकी भर्ती के संभावी स्रोतों का उन्मूलन करने और दीर्घावधि के मानवतावादी बजट को कम करने की सामर्थ्य है। विकासशील देशों के लिए लक्षित विकास सहायता (TDA) के पास स्थानीय मेजबान समुदायों को लाभ पहुंचाने, अल्पविकसित सीमा क्षेत्रों के विकास में योगदान करने और सामाजिक संघर्ष तथा असुरक्षा को कम करने की सामर्थ्य है।

सफल लक्षित विकास सहायता (TDA) के लिए कुछ राजनीतिक घटकों की जरूरत होती है। भूतकाल के अभ्यास सुझाते हैं कि इसके लिए एक महत्वपूर्ण, दाता और मेजबान दोनों देशों के परस्पर सम्बद्ध प्रतिबद्धता की जरूरत होती है। उत्तरी राष्ट्रों के लिए आवश्यक होगा कि वे सार्थक अतिरिक्त विकास सहायता प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हों जो वर्तमान बजट का स्थानापन्न न बने जो अन्यथा राष्ट्रीय नागरिकों को लाभ पहुंचाता बल्कि एक ऐसे एकीकृत उपागम के तौर पर हो जो शरणार्थियों और नागरिकों दोनों को लक्षित करे।

इस बीच दक्षिणी राष्ट्रों के लिए जरूरी होगा कि वे स्व-सामर्थ्य और संभावित स्थानीय एकीकरण का प्रस्ताव देने को इच्छुक हों; शरणार्थी संरक्षण क्षमता को बढ़ाने की प्रतिबद्धता। राजनीतिक समझौते को सुविधाजनक बनाने के लिए एक तटस्थ बिचौलिया और एक

विश्वसनीय सौदेबाजी की प्रक्रिया की जरूरत होगी। सफल लक्षित विकास सहायता (TDA) के लिए कुछ व्यावहारिक घटकों की आवश्यकता होती है। इनमें से सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्च आयुक्त यूएनएचसीआर और विकास कर्ताओं के बीच संस्थागत सहयोग; सरकार और नई बजट दिशाओं में एकीकरण जो सरकारी विभागों के विभाजन को रूपांतरित कर सके और सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह कि एकीकृत उपागम पर आधारित सही प्रकार के हस्तक्षेप हों, आजीविका पर केन्द्रित, पूर्व प्रचलित सामुदायिक संरचनाओं का उपयोग और परियोजना के क्रियान्वयनों को जांचने परखने के लिए मूल्यांकनों का उपयोग करे।

यदि इन पूर्व शर्तों को पूरा किया जा सकता है तो यह भी संभव होगा कि हम एक नए उत्तर-दक्षिण 'भव्य सौदेबाजी' की ओर बढ़ने का काम कर सकें जो संरक्षण और दीर्घावधि के समाधानों तक शरणार्थियों की पहुंच को बढ़ा सकता है; साथ ही दक्षिणी राष्ट्रों के विकास की चिंताओं और उत्तरी राष्ट्रों की सुरक्षा चिंताओं का पूरी तरह समाधान भी कर सके। शरणार्थियों के लिए एकीकृत विकास उपागम के वायदे को पूर्ण करने के लिए आवश्यक ठोस कदमों में भूतकाल में शरणार्थियों के संरक्षण को बढ़ाने के लिए विकास सहायता को लागू करने के व्यवहारों से मिले सबक का व्यवस्थित विश्लेषण करना शामिल है।

दाता और मेजबान दोनों राज्यों की चिंताओं और हितों को बेहतर ढंग से समझने के लिए दोनों देशों से स्वतंत्र परामर्श किया जा सकता है जिससे कि परस्पर लाभकारी, दोनों के लिए विजयी स्थिति वाले सहयोग के आधारों की पहचान की जा सके। राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न मंत्रालयों जैसे कि विकास मंत्रालय, गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण सहयोग के साथ ही 'शरणार्थी और विकास सहायता' के लिए नए अन्तर-मंत्रालयी बजट का सृजन भी शामिल हो।

विकास अभिकर्ताओं जैसे कि संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) और विश्व बैंक को राष्ट्रीय विकास में शरणार्थियों द्वारा निभाए जाने वाले महत्वपूर्ण संभावनाशील भूमिका की पहचान करनी चाहिए तथा जब उनको उपेक्षित किया गया तब उनके द्वारा विकास पर डाले गए संभावित 'बंधनकारी अवरोध' की भी पहचान की जानी चाहिए। जीएफएमडी को इस बात की मान्यता देनी चाहिए कि व्यापक 'प्रवासन और विकास' कार्यवृत्त में शरणार्थी एक महत्वपूर्ण घटक हैं।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (UNHCR) को दीर्घावधि शरणार्थी स्थितियों (PRS) पर पहले से चल रहे कार्य के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में विकास सहायता और शरणार्थियों पर अन्तर-राष्ट्रीय और अन्तर-एजेंसी संवाद को सहज बनाने में उत्प्रेरक की भूमिका निभानी चाहिए। इस संभावना को पूर्ण करने के लिए उठाए गए पहले कदम में सरकारी मंत्रालयों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय संवादों के अन्तर्गत विकास-शरणार्थी संबंध को वापस कार्यवृत्त में शामिल करना होगा। यह प्रवासन और विकास, दीर्घावधि शरणार्थी स्थितियों और आश्रय के बाहरी आयाम तथा आप्रवासन नीति पर चर्चा के एक महत्वपूर्ण घटक को प्रस्तुत करता है और इसे इन सभी वाद-विवादों का एक महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य होना चाहिए।

मुद्दे को कार्यवृत्त में वापस रखने के लिए इस बात की आवश्यकता होगी कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास अभिकर्ताओं को इस तथ्य के प्रति संवेदनशील बनाया गया हो कि शरणार्थी साधारण तौर पर सिर्फ 'यूएनएचसीआर का मुद्दा' नहीं है बल्कि विकास समुदाय द्वारा इसके लिए व्यापक वचनबद्धता की दरकार है। इसके लिए आवश्यकता होगी कि ऐसे राष्ट्र जो पहले से ही सक्रिय रूप से टीडीए (लक्षित विकास सहायता) के उपयोग

के प्रति सक्रिय रूप से प्रतिबद्ध हैं– जैसे कि डेनमार्क की सरकार– वे उस महत्वपूर्ण भूमिका पर, व्यापक वाद-विवाद को प्रोत्साहित करने और सुविधाजन बनाने के लिए नेतृत्वकारी भूमिका निभाएं, जो ये शरणार्थी संरक्षण को बढ़ाने के संबंध में निभा सकते हैं। ऐसी पहलकदमियों का विकास, जो दीर्घावधि समाधानों और शरणार्थी संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए लक्षित विकास सहायता का उपयोग करते हैं, द्विपक्षीय स्तर पर, अन्तर-क्षेत्रीय स्तर पर या फिर बहुपक्षीय स्तर पर होना चाहिए। व्यवहार में, इस क्षेत्र में अधिकांश उत्तर–दक्षिण भागीदारी के द्विपक्षीय (उदाहरण के लिए जैसे डेनमार्क व यूगांडा के बीच भागीदारी थी) या फिर अन्तर-क्षेत्रीय (जैसे कई यूरोपीय संघ–अफ्रीकी समझौते हैं) होने की संभावना है। हालाँकि, जीएफएमडी के संदर्भ में बहुपक्षीय संवाद या रक्षा चुनौतियों पर उच्चायुक्तों के संवाद एक ऐसा संदर्भ प्रदान कर सकते हैं जिसके अन्तर्गत 'सर्वश्रेष्ठ व्यवहार' पर एक अति महत्वपूर्ण चर्चा हो सकती थी और मूलभूत सिद्धांतों पर सहमत हुआ जा सकता था।

4.7 सारांश

यदि कोई समुदाय प्रवासियों द्वारा लाए गए परिवर्तनों के साथ रह सके तो प्रवासन समुदाय के विकास को उन्नत करने में सहायता कर सकता है। प्रवासी संघों के पहलकदमियों का सरकार द्वारा किए जाने वाले समर्थन को प्रवासियों के द्वारा विकास को प्रोत्साहन के रूप में देखा जा सकता है न कि संसक्त विकास रणनीति (coherent development strategy) में प्रवासियों की सहभागिता को प्रोत्साहन देने के रूप में। प्रवासीजन विकास में न सिर्फ एक 'विकास अभिकर्ता' के रूप में बल्कि विमर्श में नए परिप्रेक्ष्यों को शामिल करके भी मूल्यवर्धन करते हैं। प्रवासी, सार्वजनिक वाद-विवाद को सुधारने और सरकारी सुधारों को प्रोत्साहित करने में एक दबाव समूह के रूप में सेवा कर सकते हैं। प्रवासन संजालों (Migration Networks) को लागतों को कम करने और सम्भवतः प्रवासन के लाभों को बढ़ाने की तरह भी देखा जा सकता है। एक दूसरी तरह के नेटवर्क प्रभाव में व्यावसायिक और व्यापार नेटवर्कों की निर्मिति को शामिल किया जा सकता है; ऐसे प्रवासी बाहरीपन (diaspora externality) को समाजशास्त्रीय ग्रन्थों में बहुत पहले से मान्यता मिली हुई और अभी बिल्कुल हाल में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अर्थशास्त्रियों द्वारा भी मान्यता मिल गई। प्रवासियों द्वारा भेजा जाने वाला धन मानव पूँजी को सुधार सकता है लेकिन ऐसा करने में वह कुछ जनसंख्याओं को आगे प्रवासन पर निर्भर भी बना सकता है।

4.8 इकाई के अंत में प्रश्न

1) प्रवासन, जेंडर और विकास में संबद्धताओं की व्याख्या करो। अपने उत्तर की पुष्टि के लिए उपयुक्त केस स्टडीज का विवरण भी दीजिए।

2) लागत और वसूली प्रवासन से किस तरह संबंधित है? जेंडर परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए स्त्री श्रम पर विशेष रूप से केन्द्रित केस अध्ययनों और उदाहरणों का उपयोग करो।

3) महिलाओं पर वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन के प्रभाव की चर्चा करो।

4.9 संदर्भ

Bach, Jonathan (2011). 'Remittances, gender, and development'. In Marianne H. Marchnad and Anne Sisson Runyan (Edts.). *Gender and Global Restructuring: Sightings, Sites, and Resistances*. London and New Your: Routledge.

Barber, P. G. (2011). 'Women's work unbound: Philippine Development and Global Restructuring'. In Marianne H. Marchnad and Anne Sisson Runyan (Edts.). *Gender and Global Restructuring: Sightings, Sites, and Resistances*. London and New Your: Routledge.

Ehrenreich, B and A.R. Hochschild (2011). 'Global Women'. In Nalini Visvanathan, Lynn Duggan, Nan Wiegersma and Laurie Nisonoff (Edts.). The Women, Gender and Development Reader. London: Zed Books.

Lo, Marieme S. (2008). 'Beyond Instrumentalism: Interrogating the Micro-dynamic and Gendered and Social Impacts of Remittances in Senegal', Gender, Technology and Development. 12 (413).

OECD (2004). Migration for Employment. Bilateral Agreements at a Crossroad, OECD, Paris.

Pyle, J.L. (2011). 'Globalization and the Increase in Transnational Care Work: The Flip Side'. In Nalini Visvanathan, Lynn Duggan, Nan Wiegersma and Laurie Nisonoff (Edts.). The Women, Gender and Development Reader. London: Zed Books.

World Migration (2008). Managing Labour Mobility in the Evolving Global Economy. IOM, Geneva.

World Migration Report (2011). Communicating Effectively About Migration, International Organization For Migration 2011.

Zachariah, KC, ET Mathew and S Irudaya Rajan. (2003). Impact of Migration on Kerala's Economy and Society" International Migration, 39(1), pp.63-88.

Zachariah, K.C. and S Irudaya Rajan (2009). Migration and Development, The Kerala Experience, New Delhi: Daanish Books.

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

World Migration Report (2011). Communicating Effectively About Migration, International Organization For Migration 2011.

Zachariah, K.C. and S Irudaya Rajan (2009). Migration and Development, The Kerala Experience, New Delhi: Daanish Books.